अब, सदन के नेता माननीय प्रधानमंत्री, विपक्ष की माननीय नेता तथा अन्य नेता अध्यक्ष महोदय को अध्यक्षपीठ तक ले जाएं।

(सदन के नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी तथा विपक्ष की नेता श्रीमती सोनिया गांधी श्री मनोहर जोशी को अध्यक्षपीठ तक ले गए।)

अपराह्न 12.11 बजे

[अध्यक्ष महोदय (श्री मनोहर जोशी) *पीठासीन* हुए।]

अध्यक्ष महोदय: मित्रो, मुझे अध्यक्ष निर्वाचित करने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। क्या मैं माननीय प्रधानमंत्री से सभा को सम्बोधित करने का अनुरोध कर सकता हूं?

अपराह्न 12.12 बजे

अध्यक्ष को बधाई

[हिन्दी]

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी): अध्यक्ष महोदय, लोक सभा के अध्यक्ष पद पर निर्वाचित होने के लिए आपको बहुत-बहुत बधाई। आप निर्विरोध चुने गये हैं। एक परिपाटी का पालन हुआ है तथा हमें संसदीय लोकतंत्र में परिपाटियों को और भी मजबूत बनाना है। नियमों के साथ स्वस्थ परम्पराएं डाली जाएं और उनका दृढ़ता से पालन हो, यह बहुत आवश्यक है। आप अध्यक्ष के नाते इस आसन पर बैठे हैं। यह आसन बड़े दायित्व का आसन है, जिम्मेदारी भी है और संसद की प्रतिष्ठा भी आपके हाथों में है। आपका जीवन सार्वजनिक गतिविधियों से हमेशा सम्पन्न रहा है। धरातल से उठकर, जमीन के कार्यकर्त्ता के रूप में आपने सार्वजनिक जीवन आरम्भ किया। शिक्षा से आपका गहरा संबंध रहा है लेकिन शिक्षा के साथ-साथ आपने राजनीति में भी लोक प्रतिनिधि के नाते अनेक दायित्व संभाले। आप कॉरपोरेटर रहे, विधान सभा के सदस्य के रूप में आपने काम किया, विधान-परिषद् में आपको सेवा करने का मौका मिला। आप केन्द्र में, प्रदेश में, मंत्री रहे और मुख्यमंत्री भी रहे। इन सारे पदों का दायित्व आपने बड़ी कुशलता से निभाया। लेकिन इसके साथ आपने शिक्षा का जो एक अभियान शुरू किया और विशेषकर टैक्नीकल शिक्षा का कि महाराष्ट्र के मानुस को टैक्नीकल शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

उद्योग और व्यापार में आगे बढ़ना चाहिए। इस दृष्टि से आप सदैव प्रयत्नशील रहे हैं। मुझे बताया गया है कि महाराष्ट्र में जहां-जहां बस स्टैंड है, वहां कोहिनूर टैक्निकल इंस्टीट्यूट्स हैं। मैं नहीं जानता कि बस स्टैंड के हिसाब से इंस्टीट्यूट खोला गया है या इंस्टीट्यूट के हिसाब से बस स्टैंड बनाया गया है, लेकिन दोनों का मेल है।

मुख्यमंत्री के नाते, मुझे यह भी बताया गया कि सारा सरकारी और राजकीय दायित्व निभाते हुए भी आपने शिक्षा से नाता बनाए रखा और 'वर्षा' में जो मुख्यमंत्री का निवास है, उसमें एक कक्ष ऐसा था, जिस में छात्र आकर पढ़ सकते थे, ब्लैकबोर्ड रखा हुआ था और आप कभी-कभी वहां जाकर शिक्षक के रूप में काम करते थे। किसी ने मुझे कहा कि जोशी जी सर के रूप में जाने जाते हैं। शिक्षक के नाते, सर के रूप में उनका संबोधन होता है। आज आप स्पीकर के पद पर बैठे हुए हैं। यह विक्रमादित्य के सिंहासन की तरह से एक प्रतिष्ठा और गरिमा का पद है। इस पर जो भी बैठेगा, न्याय करेगा, निष्पक्ष रहेगा, संविधान और नियमों के अनुसार सदन चलाएगा। इस दृष्टि से जो जिम्मेदारी आपके ऊपर आई है, आप उसका अच्छी तरह निर्वाह करेंगे, हमें इसका पूरा विश्वास है। इसमें हमारा सहयोग आपको सदैव मिलता रहेगा।

अभी डिप्टी स्पीकर महोदय ने स्मरण दिलाया कि कुछ ही दिनों बाद संसद की स्वर्ण जयन्ती होने वाली है। 13 मई को समारोह का आयोजन किया गया है। अगर आप पुरानी कार्यवाही उठा कर देखें तो लगभग इन्हीं तिथियों में दादा साहेब मावलंकर लोक सभा के अध्यक्ष चुने गए थे। आप ऐसे पद पर विराजमान हो रहे हैं। परम्परा की रक्षा हो, गरिमा बढ़े और सदन ठीक तरह से चले, इस बात की आवश्यकता है। जैसा मैंने कहा कि इस पद पर जो बैठेगा, वह न्याय करेगा, निष्पक्ष रहेगा, पद की प्रतिष्ठा को कायम रखेगा, ऐसा मुझे पूरा विश्वास है।

स्वर्गीय बालयोगी जी के निधन के कारण अध्यक्ष पद का भार आपको संभालना पड़ा है। जब वह पहली बार अध्यक्ष बने थे, तब यह भरोसा नहीं था कि वह किस तरह से सबको साथ लेकर चल पाएंगे, सदन का ठीक तरह से संचालन कर सकेंगे लेकिन उन्होंने अपना कद इतना ऊंचा कर लिया कि आज उनका स्मरण हमें होता है और अच्छे स्पीकरों के रूप में उनको याद किया जाएगा। आप उसी परम्परा में विद्यमान हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि आपके मार्गदर्शन में सदन ठीक तरह से चलेगा।

सदन नियंत्रित होकर चलेगा, आत्म-नियंत्रण से चलेगा और जहां कोई कमी दिखाई देगी तो उसे आप मिल-बैठकर सब की सलाह से उस कमी को पूरा करने का प्रयास करेंगे।

स्व. बालयोगी की मृत्यु के बाद उपाध्यक्ष के रूप में श्री सईद साहब ने दायित्व संभाला और बड़ी अच्छी तरह से संभाला। मैं

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

उनकी प्रशंसा करना चाहता हूं, औपचारिकता के रूप में नहीं। आज उनका जन्म-दिन भी है और इसलिए बहुत बधाइयां। मैंने जब सवेरे उन्हें टेलीफोन किया और बधाई दी तो उन्होंने कहा कि मैंने जो कुछ किया, सब के सहयोग से किया है। उन्होंने बड़ी कठिनाई के दिनों में संसद की नैया खेकर किनारे तक पहुंचाई है। अब नया नाविक सम्भालेगा और तूफानों का सामना करेगा। मगर सब के सहयोग से हम सब तूफान पार करेंगे, इसके बारे में किसी के मन में कोई संदेह नहीं होना चाहिए।

मैं सईद साहब को भी बधाई देना चाहता हूं और फिर आपका भी अभिनन्दन करना चाहता हूं। आपने बड़ी जिम्मेदारी सम्भाली है। परमात्मा आपको वह जिम्मेदारी पूरी करने के लिए शक्ति दे।

श्रीमती सोनिया गांधी (अमेठी): अध्यक्ष महोदय, कांग्रेस पार्टी की ओर से और अपनी ओर से मैं आपके अध्यक्ष चुने जाने पर माननीय प्रधान मंत्री जी का साथ देते हुए आपको बधाई देती हूं।

महोदय, स्वतंत्र भारत की सबसे बड़ी उपलब्धि वह लोकतांत्रिक प्रणाली है जिसे हमने स्थापित किया और पोषित किया है। संसद इस लोकतंत्र का प्रतीक है। यह इस राष्ट्र की सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्था है जो हमारी स्वतंत्रता की रक्षा करती है और हमारे शासन तंत्र को सुदृढ़ बनाती है।

अध्यक्ष महोदय, आपके ऊपर हमारी संसद की सर्वोच्च परंपराओं को बनाए रखने की महान जिम्मेदारी है। आप सार्वजनिक जीवन के विभिन्न चरणों से गुजरे हैं। आपके गहन अनुभव को देखते हुए मुझे पूरा विश्वास है कि आपके लिए सभी सार्वजनिक मुद्दों और सदन के सभी पक्षों के साथ न्याय करना कठिन नहीं होगा। यह सदन न केवल सम्पूर्ण राजनैतिक रुझान को अपितु हमारे देश की अनेकता को भी प्रतिबिम्बित करता है। श्री मावलंकर से आरंभ होकर प्रतिष्ठित अध्यक्षों ने इस सदन में महान परंपराएं स्थापित की हैं। उन्होंने अनेक अवसरों पर न केवल इस पूरे सदन का अपितु भारत के लोगों की भावना का भी प्रतिनिधित्व किया है। महोदय, हम आशा करते हैं कि आप समय की कसौटी पर खरी उतरी इस परंपरा को अक्षुण्ण बनाए रखेंगे।

महोदय, हम अपनी ओर से आपको अपने इन दुःसह कर्त्तव्यों का निर्वाह करने में अपना पूर्ण सहयोग देंगे। मैं इस अवसर पर हमारे उपाध्यक्ष महोदय को आज उनके जन्म दिवस पर बधाई देने में भी माननीय प्रधानमंत्री जी का साथ देती हूं।

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर): अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी पार्टी और अपनी ओर से आपको इस महान देश के सर्वोच्च पदों में से एक को ग्रहण करने के अवसर पर बधाई देता हूं और मंगल कामना करता हूं। मैं हमारे प्रिय उपाध्यक्ष जी को भी उनके जन्म दिवस के उपलक्ष्य में अपनी ओर से विशेष बधाई देता हूं।

देश परीक्षा के दौर से गुजर रहा है; हम इसे नकारें नहीं। हमारे लोकतांत्रिक कार्यकरण के मूलाधार पर ही प्रश्नचिन्ह लगा है। गंभीर आर्थिक और सामाजिक मुद्दे देश में तनाव पैदा कर रहे हैं। इस सबसे ऊपर देश के भविष्य, अखंडता और एकता के बारे में ही देश में तनाव है। कुछ शक्तियां देश को अस्थिर करने का प्रयास कर रही हैं। ये सब मुद्दे इस सदन पर भी अपनी प्रतिछाया डाल रहे हैं, जैसा कि होगा ही। विपक्ष के सदस्य होने के नाते हम समय-समय पर इन मुद्दों को उठाते रहेंगे। मुझे विश्वास है कि मुद्दे के महत्व को ध्यान में रखते हुए और विपक्ष की भावनाओं को समझते हुए आप हमें इन्हें उठाने का पर्याप्त अवसर देते रहेंगे।

गत दो दिनों से, मैं नहीं जानता कि हमारे चतुर संसदीय कार्य मंत्री ने किस चतुराई से यह काम निकाला, बहुत सा अनावश्यक विवाद चल रहा है कि क्या आपका चुनाव निर्विरोध या सर्वसम्मति से है ...*(व्यवधान)* आज आप सदन के अध्यक्ष हैं। देश में सभी यह जानते हैं कि संदेह क्यों व्यक्त किए गए। ऐसा आपकी राजनैतिक सम्बद्धता, राजनैतिक साझेदारी और उस दल की नीतियों और कार्यक्रमों के कारण है जिसका आप प्रतिनिधित्व करते हैं। वस्तुतः यहां तक कि चुनाव आयोग को भी कुछ आदेश जारी करने पड़े थे। मैं उस सब विवाद में नहीं पड़ रहा हूं। ...*(व्यवधान)* यह किसी व्यक्ति पर आक्षेप नहीं था ...*(व्यवधान)* मैं इसे स्पष्ट कर देना चाहता हूं क्योंकि सभी हमसे पूछ रहे हैं कि यह क्या है ...*(व्यवधान)* यह किसी व्यक्तित्व पर आक्षेप नहीं है।

यहां हममें से प्रत्येक कुछ नीतियों, कार्यक्रमों, लक्ष्यों और रवैये का प्रतिनिधित्व करता है। हम यहां शून्य से उपज कर नहीं आए हैं। इसीलिए, कुछ विचार व्यक्त किए गए थे। लेकिन मुझे यह लगता है कि अन्ततः इस सदन को आपका स्नेही स्पर्श मिलेगा। आज आप जहां बैठे हैं वह कांटों भरा सिंहासन होगा या फूलों की सेज, यह इस सदन में हमारे व्यवहार पर निर्भर करेगा, और इसमें आपके नेतृत्व का बड़ा महत्व होगा। हमें आशा है कि आप स्वयं को किसी दूर नियंत्रक रिमोट कन्ट्रोल के सम्मुख समर्पित नहीं होंगे ...*(व्यवधान)* मैंने कहा, मुझे विश्वास है कि यह समर्पण नहीं करेंगे। आपको भाव भी समझना चाहिए।

महोदय, आपको संतुलन भी बनाना चाहिए। बल्कि हम आपसे अनुरोध करते हैं कि आपका झुकाव 'वाम' पक्ष की ओर होना चाहिए क्योंकि वाम पक्ष हमेशा बेहतर पक्ष होता है। माननीय प्रधानमंत्री जी ने एक प्रशिक्षक के रूप में आपके सफल कार्यकाल